uxjh; lekt dh ifjHkk"kk

uxjh; lekt e 0;fDr;k d ikjLikfjd lc/kk] vkfFkd fd;kvk]lekftd lxBu] tul[;k lc/kh fo"k'krkvk] vk|kfxdh rFkk vkokl d Lo:lk tlh fo"k'krk,] vkfne vkj xkeh.k lektk e i.kr;k fHkUu gku d dkj.k bl ,d iFkd thoufo/kh d :lk e n[kk tkrk g A

कुछ विशिष्ट व्याख्याएँ निम्नानुसार हैं—

ई. ई. बर्गेल- कोई भी आवासीय बस्ती जिसके बहुसंख्यक निवासी कृषि कार्यों के अतिरिक्त अन्य कार्यों में नियोजित हों, उसे हम नगर कहते हैं।

इस परिभाषा में **बर्गेल** ने व्यवसाय के आधार पर नगर की व्याख्या करते हुए ग्राम से भिन्न बताया है। **बिल कॉक्स** ने भी जीवन निर्वाह के लिये किये जाने वाले कार्य के आधार पर नगर और ग्राम में भेद किया है। उनके अनुसार ग्राम और नगर में मूलभूत अंतर कृषि और अन्य उद्योगों का है। उनके अनुसार ग्राम कृषि कार्य के आधार पर तथा नगर अन्य प्रकार के उद्योग-धंधों के आधार पर पहचाने जाते हैं।

नगरीय समुदाय इतनी विविधता और जटिलता से युक्त समुदाय होते हैं कि उन्हें किसी एक आधार या तत्व को ध्यान में रखकर परिभाषित नहीं किया जा सकता है। नगरीय समुदाय के अर्थ को समझने के लिये उसकी समस्त विशेषताओं को संयोजित कर देखना होगा।